संप्रत्यय के रूप में प्रस्तुत किया है। इनके मतानुसार दोनों का दो कारकों से अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण प्रभावित होता है। मनोवृत्ति वस्तु के महत्व से तात्पर्य इस वस्तु के प्रति A एवं B दोनों व्यक्तियों के भाव की मात्रा, विश्वास की तीव्रता तथा निहित व्यवहार की मात्रा से है। प्रासंगिकता का मतलब दोनों व्यक्तियों के उस संस्थान या समूह से है जिसमें उस मनोवृत्ति द्वारा दोनों के जीवन को प्रभावित करने की क्षमता का प्रत्यक्षण या आभास होता है। ऐसी मनोवृत्तियाँ जितनी ही अधिक महत्वपूर्ण होगी और दोनों के लिए वे सामान्य रूप से प्रासंगिक होगी, उनसे उत्पन्न संतुलन उतना ही मधुर एवं प्रबल होगा। ऐसी महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक मनोवृत्तियों में समानता होने पर A और B के बीच आकर्षण अधिक होगा किन्तु भिन्नता होने पर विकर्षण अधिक होगा।

न्यूकॉम्ब (1961) द्वारा प्रतिपादित अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण के इस संतुलन सिद्धान्त से संतोषप्रद व्याख्या संभव होती है। इसके अनुसार जो लोग किसी महत्वपूर्ण एवं सामान्य रूप से प्रासंगिक वस्तु की ओर सामान्य मनोवृत्तियाँ रखते हैं, उनके बीच आकर्षण अधिक है। इस तथ्य की पुष्टि हेतु न्यूकॉम्ब (1961) के अध्ययन का उल्लेख समीचीन होगा। इन्होंने एक मकान में कुछ अजनबी छात्रों को 16 सप्ताह तक एक साथ रखा गया। इस दौरान विभिन्न वस्तुओं के प्रति उनकी मनोवृत्तियों एवं उनमें आपसी विकसित आकर्षण को समय-समय पर मापा गया। यह पाया गया कि जिन छात्रों की मनोवृत्तियाँ एक-दूसरे के समान थी, उनमें अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण अधिक पाया गया।

कुछ अन्य अध्ययनों में भी पाया गया है कि उन दो व्यक्तियों में अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण अधिक था जब उनमें से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को पहले ही समझता, वैसा कि पहला व्यक्ति अपने आपको समझता है। डोहर्टी एवं सेकर्ड (1971) ने आत्म-

B की मनोवृत्ति को अपने से भिन्न समझ कर देखें। इससे असंतुलन की अवस्था संतुलन की अवस्था में बदल जाएगी। इस प्रकार के समाधान को भ्रम भी कहा जाता है।

(ii) A, B को यह विश्वास दिलाने में सफल हो सकता है कि वह X के प्रति अपनी मनोवृत्ति विकसित कर लिया है। यदि A को इस प्रयास में सफलता मिल जाती है तो X के प्रति B की मनोवृत्ति A की मनोवृत्ति के समान हो जाएगी और इस तरह से एक संतुलन की अवस्था उत्पन्न होगी। ऐसी परिस्थिति में A और B का परस्पर आकर्षण अधिक हो जायेगा।

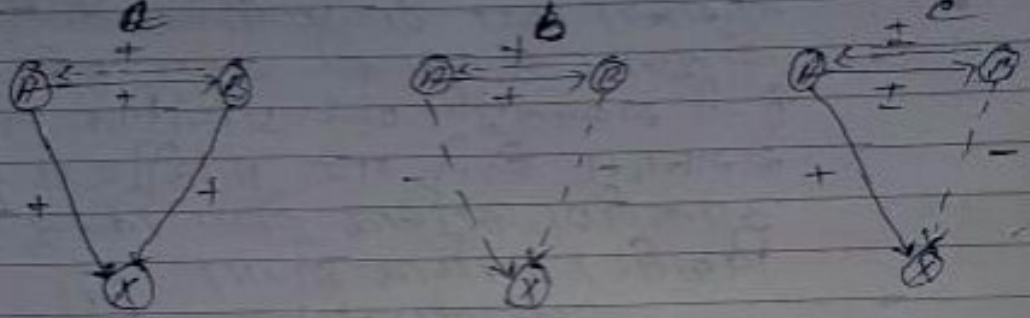

(iii) X के प्रति B की मनोवृत्ति के समान A भी अपनी मनोवृत्ति बना ले सकता है। जैसे X के प्रति B की ऋणात्मक मनोवृत्ति के समान A भी X के प्रति ऋणात्मक मनोवृत्ति करके एक संतुलित अवस्था उत्पन्न कर सकता है। इससे दोनों की बीच परस्पर आकर्षकता में वृद्धि हो जायेगी। इसे रेखा चित्र b से स्पष्ट किया गया है।

(iv) A अपना आकर्षण B के प्रति कम कर ले सकता है और यह भी विश्वास कर ले सकता है कि B का आकर्षण भी उसके प्रति बहुत कम है। इससे भी असंतुलन की अवस्था संतुलन की अवस्था में बदल जाएगी। इसमें दोनों ही व्यक्ति X के प्रति अपनी मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं ला पाते हैं। ऐसी स्थिति में A और B में अन्तर्वैयक्तिक आकर्षण विकर्षण में बदल जाता है। इसे ऊपर अंकित चित्र 'c' से दिखलाया जा सकता है।

मनोवृत्ति वस्तु का महत्व एवं सामान्य प्रासंगिकता को न्यूकोम्ब (1961) ने प्रमुख